# राजभाषा के रूप में हिंदी

## ❖ हिंदी को राजभाषा क्यों बनाया गया।

भारत बहुभाषा- भाषी राष्ट्र है। यहां हिंदी सहित कई भाषाओं की समृद्ध परंपरा है। इनमें हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो सभी भाषा- भाषियों के बीच सेतु का काम करती है। इसे बोलना, समझना, लिखना, पढना अपेक्षाकृत आसान है। सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, काका कालेलकर, सुब्रह्मण्यम् भारती, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बाल गंगाधर तिलक, सरदार भगत सिंह, सी. राजगोपालाचारी सहित बडे- बडे दिग्गज जननायकों ने हिंदी को राष्ट्रहित की भाषा माना तथा उसे सर्वव्यापी बनाने में भरपूर योगदान किया। इस प्रकार से हिंदी को राजभाषा नहीं बनाए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। इसके लिए आम तौर पर जो कारण परिलक्षित है, वे इस प्रकार से हैं-

i. हिंदी सभी भागों में बोली तथा समझी जाने वाली आम जनता की भाषा है।
ii. क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग अपने प्रदेश तक ही सीमित है जबकि हिंदी का सरोकार पूरे हिंद से है।
iii. हिंदी को सभी वर्गों का मुक्त रूप से समर्थन मिला।
iv. अभिव्यक्ति की क्षमता में हिंदी अत्यंत समृद्ध भाषा है।
v. हिंदी की महत्ता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि इस भाषा में संचित ज्ञान को प्राप्त करने केलिए व्यवस्थित अध्ययन - अध्यापन देश- विदेश में यूरोप वासियों के द्वारा प्रारंभ हुआ।

vi. हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में सहयोगी भाषा रही है, जबकि अंग्रेजी भाषा ने अन्य भारतीय भाषाओं के विकसित रूप को दबाए रखा।

vii. हिंदी अपने लेखन और व्याकरणिक संरचना में संस्कृत के सर्वाधिक निकट है। इस तरह इसका विकास भारतीय भाषाओं की परंपरा में हुआ है।

viii. हिंदी की लिपि देवनागरी, वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त लिपि है। इसके अक्षर उदग्र, स्पष्ट और स्वस्थ आकार वाले है। संस्कृत के कारण यह लिपि विश्वव्यापी है।

ix. राष्ट्रीय आंदोलन के माध्यम के रूप में हिंदी प्रचार - प्रसार कम समय में ही काफी बढ़ गया था। यह स्वाधीनता आंदोलन में संपर्क भाषा थी। भारतीय स्वाधीनता का महासमर हिंदी के माध्यम से ही लड़ा गया।

x. हिंदी बोलने वालों की संख्या भारत में सर्वाधिक है। लोकतंत्र में शासक और शासित की भाषा एक ही होनी चाहिए।